Published on *Teachers of India* (http://www.teachersofindia.org)

[redacted]

By bharti pandit | [redacted] 20, 2017

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]

- [redacted]
- [redacted]
- [redacted]
- [redacted]

[redacted]

- [redacted]
- [redacted]
- [redacted]

[illegible]

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

[illegible]

लाल टमाटर लाल टमाटर,
मुझको भूख लगी भारी।
भूख लगी है तो तुम खा लो
यह गाजर मूली सारी।

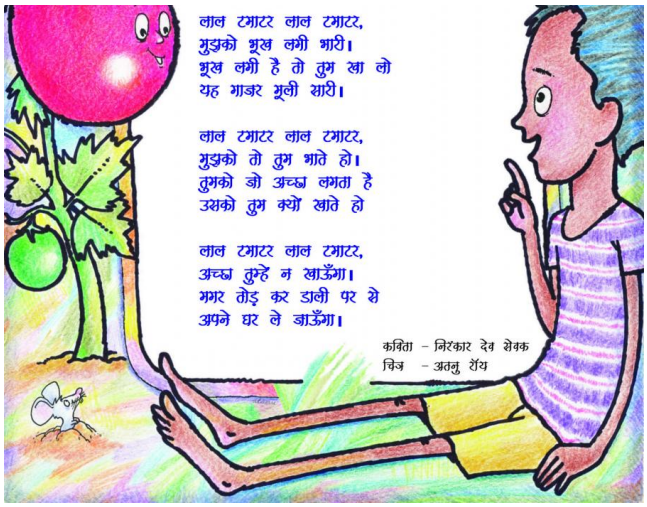

लाल टमाटर लाल टमाटर,
मुझको तो तुम भाते हो।
तुमको जो अच्छा लगता है
उसको तुम क्यों खाते हो

लाल टमाटर लाल टमाटर,
अच्छा तुम्हें न खाऊँगा।
मगर तोड़ कर डाली पर से
अपने घर ले जाऊँगा।

कविता – निरंकार देव सेवक
चित्र – अतनु रॉय

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] - NCF 2005 – [illegible]

License: CC BY-NC-SA

Source URL: http://www.teachersofindia.org/hi/article/%E0%A4%95%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A4%BE-%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%A3-%E0%A4%95%E0%A5%87-%E0%A4%89%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%AF